विकलांगता

डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर
स्वा. सावरकर महाविद्यालय,
बीड
९२२६४९००३२.

विकलांगता या तो जन्मजात या दुर्घटना के कारण या बीमारी के कारण उत्पन्न होती है। कारण चाहे जो भी हो विकलांग व्यक्ति को प्राय: उपेक्षित, तिरस्कृत या बोझ की तरह माना जाता रहा है। विकलांगता समाज के लिए समस्या है। प्रकृती, समाज एवं व्यक्ति विकलांगता की जननी है। जहॉ भौतिक सुख–सुविधा बढी है, जंगल कटते जा रहे है, इससे पृथ्वी का प्रकोप बढ़ा है। बाढ, तूफान, जंगल की आग ने मनुष्य को विकलांग बनाया है। मादक दृव्यों का सेवन, अस्वच्छ आवास, लडाई–झगड़ा नीम हकीम की दवाइयों, सामाजिक रूढ़ियां, प्रदूशित वातावरण, आर्थिक विशमताओं के कारण अर्थभाव एवं अज्ञानता, सड़े गले भोज्य पदार्थ को सेवन या झाड फूंक पर विश्वास करने सकलांग मनुष्य विकलांग हो जाता है।

''जहां मनुष्य सामाजिक परिस्थितियों के कारण हीन–भावना से भर जाता है वहीं से विकलांगता शुरू होती है।''[१]

''विकलांगता केवल लूले–लंगडे, अंधे–बहरे से उत्पन्न नहीं होती बल्कि वैश्वीकरण ने भी मनुष्य की विकलांगता को बढावा दिया है।''[२]

समाज में विकलांग प्राय: उपेक्षित–तिरस्कृत, कौतुहल हास्य व दया के पात्र प्रमाणिक होते है। अनेक लोग विकलांगता को छिपाकर रखते है साथ ही साथ घर के कोने में पडे हुए किसी–वस्तू की तरह उन्हें महत्त्वहीन समझा जाता है।

''आज पूरे देश में विभिन्न प्रकार के लगभग १२ करोड़ विकलांग है। यू.एन.ओ का सर्वेक्षण दस प्रति ात आबादी की पुष्टि करता है।''[३]

विकलांगों को केन्द्र में रखकर साहित्य – सृजन करना समय की मांग है। जाति और लिंग से रहित शुध्द मानवतावादी दृष्टि पर आधारित विकलांग चेतना महत्त्वपूर्ण है जो किसी मानव को जन्म से या जीवनपर्यंत किसी दूर्घटना या विकार से कभी भी (विकलांगता) आ सकती है। मानव ईश्वर की अनुपम संरचना है। जगत में कोई भी प्राणी सर्वगुण संपन्न नही है। गुणवान व्यक्ति में कोई ना कोई दोष एवं गुणहीन व्यक्ति में कोई ना कोई गुण आवश्यक होता है। विकलांगता अभिशाप नही है नही विकलांग व्यक्ति कृपा का मोहताज होता है। जरूरत अगर है तो इंसानियत की जिससें विकलांग की पीडा विकलांग मन में जागृत न होकर आत्मविश्वास पैदा हो। शरीर भले ही विकलांग हो, मन विकलांग नही होना चाहिए क्यों की मन उर्जा का केन्द्र है। साहित्यिक कथाओ में देखे तो हम पाते है कि जो विकलांग है वे कही न कही सकलांगो को चुनौती देते है। उनके ज्ञानचक्षु इतने तीक्ष्ण होते है कि वे किसी भी संदर्भ में पीछे नही

रह सकते। नेत्रहीन वात्सल्य सम्राट सूरदास की कथा भी कई व्यथा को दूर कर देगी। उनकी काव्य प्रतिभा से उनकी विकलांगता लुप्त हो गयी और वह साहित्य आकाश में सूर्य की तरह दैदिप्यमान हो गये।

एक नेत्र वाले कुरूप मलिक मोहम्द जायसी ने पद्मावत में पद्मावती के रूप को जिन बखूबी से गढ़ा है उससे सौंदर्य का मान और बढ़ा है। तब जायसी की कुरूपता दैदिप्यमान हो जाती है।

देश की प्रसिध्द नृत्यांगना सुधा चंद्रन लिखती है – ''१६ साल की उम्र बहुत'' नाजुक होती है। उसी प्यारी सी उम्र में लोग सपने देखते हैं। कुछ बनने, कुछ कर गुजरने का ख्याल मन में हिलोरे लेने लगता है। ठीक उसी उम्र में मेरी एक टांग चली गई लेकिन हिम्मत न गई। वह एक्सीडेंट मेरे जीवन में भगवान के सच्चे आशीर्वाद के रूप में आया। मॉ, बचपन में कहा करती थी कि हर इंसान इस धरती पर किसी मकसद से आया है। उन संकट के पलों में मै यही सोचा करती थी कि मेरा जन्म भी किसी खास कामके लिए हुआ है। फिर जयपुर फुट पहन कर स्टेज में वापस आने में वक्त नही लगा। नाचे मयुरी आई और मुझे वह सब कुछ हासिल हो गया, जिसकी तमन्ना सबको होती है।''[४]

प्रेमचंद ने सूरदास को रंगभूमि का नायक बनाया है जो अंधा है। लाठी के सहारे चलता है, सडक के किनारे बैठकर भीख मॉगता है पर सहृदय है परोपकारी है। सामान्यत: अत्याचारों से लडने वाला है। मन में लगन, इच्छाशक्ति और प्रतिभा हो तो किसी भी उॅचाई तक पहुॅचना असंभव नहीं है। लड़ने और जीतने का अदम्य साहसे अंधे भिखारी सूरदास का है जो जीवन को एक खेल की तरह लेता है जिसमे जय पराजय स्वाभाविक है। तभी तो सूरदास गाव सेवक और क्लार्क जैसे काफिरों से मरते दम तक लडता है और अन्तत: अपनी जमीन को बचाने के लिये महात्मा गांधी की तरह सत्याग्रह करता है और भाहीद हो जाता है।

सूरदास में संघर्श की भाक्ति है, प्रतिकार का बल है। सूरदास की जमिन पर उद्योगपति तथा गाव सेवक सिगरेट का कारखाना खोलना चाहते है पर नैतिक विचारों वाला सूरदास बार–बार कहने पर भी अपनी जमीन बेचने को तयार नही होता। सूरदास इन सामंती ताकतों के आगे झुकता नही जिस कारण क्लार्क की गोली का शिकार होता है।

सूरदास मे आत्मबल की शक्ति सत्य में विश्वास है और अद्भुत जिजीविशा है तभी तो झोपडी के जल जाने पर मिठुआ पूछता है दादा अब हम रहेंगे कहॉ? उसे सूरदास जवाब देता है हम दूसरी झोपडी बना लेंगे।

सूरदास के मन मे औरतों के प्रति सम्मान का भाव पलता था तभी ''धीसू और विद्याधर रात में सुभागी की कलाई पकडने की धृष्टिता करते है तो वह थाने में रपट कराये बिना नहीं रहता।''[५]

सूरदास अपनी हीनता–दीनता का बोध होने पर भी कर्म–पथ से नही हटता । उसकी घोषणा है –

''तू रंगभूमि मे आया दिखलाने अपनी माया

क्यों धरमनीति को तोडे?

भई क्यों रन से मुँह मोडे?''[६]

''नायक राम की दृष्टि में सूरदास उस जन्म का महात्मा है।''[७]

''राजा महेन्द्रकुमार के भाब्दों में उस जन्म का नही ईस जन्म का महात्मा है।''[८]

''भैरो के विचार से वह आदमी नहीं साधु है।''[९]

समारोप : यह मानना पडेंगा कि विकलांग हमारे समाज के अभिन्न अंग है। पर सभी विकलांगों की मानसिक दशा क्रिया कलाप एक जैसे नही होते। यदि विकलांग अपनी वर्तमान अवस्था से आहत होकर दीनता, हीनता, असमर्थता आदि से निरीह बन जाता है तो उसका जीवन दूभर हो जाता है और वह समाज के लिए बोझ बन जाता है। पर जिन्होंने विकलांगता की मानसिकता छोड कर्म पथ पर आगे बढने का काम किया वह अपने जीवन को तथा समाज को भी नया मोड देते है। वह समाज पर बोझ नही बनते। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम विकलांगों के सामर्थ्य को गायें और उन्हे सामाजिक कार्यो में लगायें।

साहित्यकार ऐसे साहित्य का सृजन करें जो विकलांगों की व्यथा – कथा को निर्दिष्ट करे साथ ही उनके स्वाभिमान को बनाये रखने के लिए और उन्हे मुख्य धारा में जोडकर सकलांगों की तरह सम्मान से जीवन संचलित करने का सुअवसर दिला सके। विकलांगों ने प्रतिभा के आधार पर समाज में अपना होने का एहसास कराया है। ऐसे पात्रो को केन्द्रस्थ करके साहित्कार विविध विधाओं में लेखनी चलाकर विकलांग चेतना मे अपना योगदान करें। विकलांगो के आचरण में सुधार आत्मवि वास में बढोतरी करने वाला साहित्य निर्मिती करने की समाज रचनाकारो से अपेक्षा रखता है।

कुछ कथा – साहित्य के माध्यम से कुछ कहानियों का दृश्टांत प्रस्तुत किया है जो मानवीय संवेदना को झकझोर कर रख देता है और निरंतर समदृश्टी की शिक्षा देता हैं जिससे स्वभाव, ईंसानियत, प्रेम–भाव की परख, भाई–चारे का व्यवहार सिखाना ही विकलांग कथा – साहित्य का मूलमंत्र एवं उद्देश्य रहा है।

इधर हाल के वर्षों मे राष्ट्रीय और आंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकलांगों को समाज की मुख्यधारा से जोडने के लिए शासन और स्वयंसेवी संघटन आगे आये है। उनकी शिक्षा – दिक्षा रोजगार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। नोकरियों में उनके लिए आरक्षण व्यवस्था लागू की गयी है। उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से सक्षम तथा आत्मनिर्भर बनाने के उपाय किये जा रहे हैं। ये उपाय समाज में विकलांगों के प्रति बदलते नजरिया का परिणाम है। विकलांग व्यक्ति भी समाज से अपेक्षा रखते हैं कि उनहें समाज में निकृष्ट न समझा जाये। उन्हें समानता का अधिकार मिले और ऐसे साधन विकसित किये जायें जिससे वे सामान्य जीवन जी सकें। हम सभी का कर्तव्य है कि सभी विकलांगों को समान अवसर और सम्मान देना है।

संदर्भ सूची :

१. कथा साहित्य में विकलांग विमर्श, डॉ विनयकुमार पाठक, आलेख डॉ. सविता मिश्रा, पृ.२४१.
२. वही पृ. २४१.
३. वही पृ. २४१.
४. वही – आलेख चन्द्रशेखर सिंह, पृ. १८०.
५. रंगभूमि, प्रेमचंद, पृ.१.
६. वही पृ. १९९.
७. वही पृ. ५२२.
८. वही पृ. ७५.
९. वही पृ. ७५.

Research Hub International Journal